



॥ श्री सीता नवमी व्रत कथा ॥
॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सीता नवमी व्रत कथा ॥

हे जगज्जननी, पतिव्रता धर्म की आदर्श, करुणामयी माता जानकी! आपकी कृपा से यह पावन सीता नवमी व्रत कथा आरंभ होती है। जो श्रद्धापूर्वक इसका श्रवण और पाठ करता है, उसके जीवन में सुख, शांति, सौभाग्य, संतान-सुख तथा दाम्पत्य जीवन में मधुरता का वास होता है।

व्रत का महत्त्व

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को माता सीता का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है। इस दिन को सीता नवमी या जानकी नवमी कहा जाता है। मान्यता है कि इसी पावन तिथि पर मिथिला के राजा जनक को हल चलाते समय पृथ्वी से दिव्य कन्या के रूप में माता सीता प्राप्त हुई थीं।

इस दिन विवाहित स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु, अखंड सौभाग्य तथा परिवार के सुख-समृद्धि के लिए व्रत रखती हैं। अविवाहित कन्याएँ उत्तम वर की प्राप्ति तथा गृहस्थ जीवन के मंगल के लिए इस व्रत का पालन करती हैं।

श्री सीता नवमी व्रत कथा

प्राचीन समय में मिथिला नगरी में महाराज जनक राज्य करते थे। वे धर्मात्मा, न्यायप्रिय तथा महान तपस्वी राजा थे। एक समय उनके राज्य में वर्षा न होने के कारण भयंकर अकाल पड़ गया। खेत सूख गए, नदियाँ सूखने लगीं और प्रजा अत्यंत दुःखी हो गई।

राजा जनक ने ऋषि-मुनियों से उपाय पूछा। उन्होंने कहा कि राजा स्वयं यज्ञभूमि में स्वर्ण हल से भूमि की जुताई करें। इससे धरती की कृपा प्राप्त होगी और राज्य में पुनः सुख-समृद्धि आएगी।

ऋषियों के निर्देशानुसार राजा जनक ने शुभ मुहूर्त में यज्ञ प्रारंभ किया और अपने हाथों से भूमि जोतने लगे। तभी हल की नोक किसी कठोर वस्तु से टकराई। जब उस स्थान को खोदा गया तो वहाँ से एक दिव्य स्वर्णमय पात्र प्रकट हुआ। उस पात्र में अद्भुत तेज से प्रकाशित एक सुंदर बालिका विराजमान थी।

उस बालिका के दर्शन करते ही चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल गया। आकाश से पुष्पों की वर्षा होने लगी, देवताओं ने दुंदुभियाँ बजाई और ऋषि-मुनियों ने घोषणा की—

"यह कोई साधारण बालिका नहीं, स्वयं श्री महालक्ष्मी का अवतार हैं। ये समस्त संसार का कल्याण करेंगी।"

राजा जनक ने उस बालिका को अत्यंत प्रेमपूर्वक अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार किया। पृथ्वी से प्रकट होने के कारण उनका नाम सीता रखा गया। जनक की पुत्री होने से वे जानकी, मिथिला की राजकुमारी होने से मैथिली, तथा विदेह राज्य की राजकुमारी होने से वैदेही कहलायीं।

समय बीतने पर माता सीता गुण, शील, करुणा, विनम्रता और धर्मपालन में अद्वितीय हो गईं। उनके स्वयंवर में भगवान शिव का दिव्य धनुष रखा गया। राजा जनक ने घोषणा की कि जो वीर इस धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा चढ़ाएगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

अनेक राजा और योद्धा असफल रहे। तब महर्षि विश्वामित्र के साथ आए अयोध्या के राजकुमार श्रीराम ने सहज ही शिवधनुष उठाकर उसे भंग कर दिया। यह देखकर राजा जनक ने अत्यंत प्रसन्न होकर माता सीता का विवाह भगवान श्रीराम से संपन्न कराया।

विवाह के पश्चात माता सीता ने हर परिस्थिति में अपने पति का साथ निभाया। जब श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास मिला, तब उन्होंने राजमहल के सभी सुखों का त्याग कर वनगमन स्वीकार किया। वनवास के दौरान रावण ने छलपूर्वक उनका हरण किया, परंतु माता सीता ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धर्म, मर्यादा और अपने सतीत्व की रक्षा की।

अशोक वाटिका में उन्होंने भगवान श्रीराम का निरंतर स्मरण किया। अंततः श्रीराम ने रावण का वध कर माता सीता को सम्मानपूर्वक वापस प्राप्त किया। माता सीता का संपूर्ण जीवन त्याग, धैर्य, सत्य, मर्यादा और अटूट विश्वास का अनुपम उदाहरण बन गया।

तभी से वैशाख शुक्ल नवमी को माता सीता के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। जो स्त्री या पुरुष इस दिन श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक व्रत रखकर माता सीता और भगवान श्रीराम का पूजन करते हैं, उनके जीवन से कष्ट दूर होते हैं। दाम्पत्य जीवन में प्रेम बढ़ता है, परिवार में सुख-समृद्धि आती है, संतान की प्राप्ति का आशीर्वाद मिलता है तथा अंत में भगवान श्रीसीताराम के चरणों में स्थान प्राप्त होता है।

व्रत का फल

शास्त्रों में कहा गया है कि जो श्रद्धापूर्वक सीता नवमी का व्रत करता है, कथा सुनता या सुनाता है तथा श्री सीताराम का स्मरण करता है, उसे—

- अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
- दाम्पत्य जीवन में प्रेम और विश्वास बढ़ता है।
- परिवार में सुख, शांति और समृद्धि आती है।
- संतान-सुख और वंश-वृद्धि का आशीर्वाद मिलता है।
- सभी प्रकार के संकट दूर होकर भगवान श्रीसीताराम की कृपा प्राप्त होती है।

कथा का समापन

बोलिए—माता जानकी जी की जय!

बोलिए—मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी की जय!

बोलिए—सियावर रामचन्द्र की जय! पवनसुत हनुमान की जय!

॥ इति श्री सीता नवमी व्रत कथा सम्पूर्णम् ॥